संत काव्य

मध्ययुगीन हिंदी भक्ति काव्य सगुण एवं निर्गुण नाम की दो भक्ति पद्धतियां प्रच लत हुई। निर्गुण पंथ में योग और ज्ञान को ईश्वर प्राप्ति का साधन बतलाया गया तथा सगुणपंथ में श्रद्धा एवं भक्ति को। हिंदी का निर्गुण काव्य मूलत: बौद्ध धर्म की उपशाखा बज्रयान की प्रति क्रया से वक सत नाथ संप्रदाय से प्रभा वत माना जाता है। संत काव्य निर्गुण भक्ति काव्य पर दूसरा प्रभाव संत नामदेव का माना जाता है। इस प्रकार संत काव्य की वशाल परंपरा को देखते हुए इनकी निम्न ल खत वशेषताएं स्पष्ट होती है:
निर्गुण निराकार ईश्वर की भक्ति पर बल:
लगभग सभी संत क व निर्गुण एवं निराकार ब्रह्म में वश्वास रखते थे। उनका मानना था क ईश्वर तमाम गुणों से ऊपर है, उसके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। वह सर्वशक्तिमान तथा कण-कण में व्याप्त है। उनका ईश्वर अगम और अगोचर है, अजन्मा और नि र्वकार है तथा उसे कहीं बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं बल्कि वह तो प्रत्येक के हृदय में वराजमान है। कबीरदास के शब्दों में-

ज्यों तिल माही तेल, चकमक में आ ग,
तेरा साईं तुझ में है, जा ग सके सो जा ग।

निर्गुण और निराकार ब्रह्म में वश्वास होने के कारण संत क वयों ने बहुदेववाद और अवतारवाद का वरोध कया। उनका मानना था क ईश्वर एक ही है जो घट-घट व्यापी है। उनके अनुसार ईश्वर के मानव रूप में अवतार लेने की धारणा मथ्या है क्यों क उसकी सत्ता तमाम बंधनों से परे है और वह सर्वव्यापी है। संत क वयों के ईश्वर की सत्ता सभी देवी देवताओं से ऊपर है। कबीरदास कहते हैं-

अक्षय पुरुष एक पेड़ है निरंजन बाकी डार त्रिदेव शाखा भए पात भया संसार।।

गुरु की महत्ता:
संत क वयों ने अपनी वाणी में गुरु को सर्वा धक महत्व दिया है। उन्होंने गुरु को ईश्वर से भी ऊपर माना है क्यों क गुरु ही ज्ञान के द्वारा ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताता है।

गुरु गो वंद दोऊ खड़े काके लागू पाय।
ब लहारी गुरु आपने गो वंद दियो मलाय।।

उनका मानना है क गुरु की कृपा के बिना मुक्ति संभव नहीं है। गुरु शष्य के तमाम वकारों को दूर करता है और उसके भीतर आत्मनिरीक्षण की भावना पैदा कर ईश्वर को पहचानने की क्षमता पैदा करता है

गुरु धोबी सस का कपड़ा, साबुन सरजनहार।
सूरति शला पर धोइए निकसे ज्योति अपार।

अर्थात् गुरु धोबी के समान है, शष्य कपड़े के समान है और प्रभु उस साबून के समान है जिस के प्रयोग से कपड़ा साफ होता है। इस प्रकार गुरु कृपा के बिना शष्य में ज्ञान का वकास संभव नहीं है।

बाह्य आडंबरों तथा पाखंडों का वरोध:
संत क व वद्रोही और क्रांतिकारी क वयों के रूप में भी वख्यात है क्यों क उन्होंने समाज में व्याप्त कर्मकांडों, अंध वश्वासों कुरीतियों तथा दुराचारों का निर्भीक स्वर में वरोध कया है। उनका लक्ष्य सदा समाज सुधार रहा इसी लए वह समाज को सामाजिक, धा र्मक और नैतिक कमजोरियों से सचेत करना चाहते थे। हिंदू और मुस्लिम दोनों ही धर्मों में फैले भाई यह कर्मकांडों और आडंबरों जैसे मूर्ति पूजा, छापा-तिलक, तीर्थ व्रत, रोजा, नमाज आदि का डटकर वरोध कया है। मूर्ति पूजा के संबंध में हिंदुओं को फटकारते करते हुए कबीरदास कहते हैं-

पाहन पूजे हरि मले तो मैं पूजू पहाड़
ताते यह चाकी भली पीस खाए संसार

वहीं तीर्थ स्थानों पर जाकर स्नान करने की धारणा को आडंबर बताते हुए कहते हैं-

नहाए धोए क्या भया जो मन मैल ना जाए
मीन सदा जल में रहे धोए बास ना जाए

वही मुस्लिम धर्म में फैली कुरीतियों को स्पष्ट करते हुए वह कहते हैं-

दिन भर रोजा रहते हैं राति हनत है गाय।
यह तो खून वह बंदगी, कैसे मले खुदाए।

कंकर पत्थर जोड़ के मस्जिद लए बनाए।
ता चढ़ि मूल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।

जाति-पाति तथा वर्ण व्यवस्था का वरोधः
तत्कालीन भारतीय समाज वर्णगत भेदभाव तथा जातिगत बे ड़यों में जकड़ा हुआ था। संत क वयों ने सामाजिक वषमताओं को दूर करने तथा मानव धर्म की स्थापना हेतु समाज में जाति एवं वर्ण के नाम पर कए जाने वाले भेदभावों का वरोध कया है। उन्होनें कहा क ईश्वर की नजर में सभी जाति धर्म एक समान है-

जाती पाती पूछे ना ही कोई हरि को भजे सो हरि का होई।

उनके अनुसार मनुष्य अपने जन्म के अनुसार नहीं बल्कि अपने कर्म के अनुसार पहचाना जाना चाहिए-

ऊंचे कुल का जन मया जन मया जे करणी ऊँच न होई।
सोवन कलस सुरे भरया साधु निंद्या सोई।

सहज भक्ति तथा नाम स्मरण पर बलः
संत क वयों ने ईश्वर के नाम स्मरण पर वशेष बल दिया है। पाखंड और आडंबर मुक्त भक्ति ही ईश्वर को प्राप्त करने में सहायक होती है। भक्ति में प्रेम का सर्वा धक महत्त्व है। बाहरी ज्ञान और दिखावे से बेहतर आंतरिक रूप से नाम स्मरण करते रहना ही वास्त वक भक्त की पहचान है-

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पं डत भया न कोए
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पं डत हो

संत क व राम नाम को ही मुक्ति का एकमात्र आधार मानते हैं।

रहस्यवादः
रहस्यवाद में भावना है जो ईश्वर की अज्ञात सत्ता को जानने की इच्छा से उत्पन्न होती है। संत क व कबीर हिंदी साहित्य के महान रहस्यवादी क व स्वीकार कए जाते हैं। रहस्य वादियों की तरह कबीर की आत्मा भी परमात्मा के प्रेम को तड़पती रहती है। यह वरहणी आत्मा आठों पहर ईश्वर के दर्शन को तरसती है तथा उसके वषय में जानने की जिज्ञासा रखती है-

आई ना सकूं तुझ तक, सकौ न तुझ बुलाए
जियरा यूं ही लेहोगे, वरह तपाई-तपाई।

आत्मा और परमात्मा के इस तरह की स्थिति के बाद अंतिम स्थिति प्रभु मलन की होती है, जिसे कबीर ने यूं व्यक्त कया है-

जल में कुंभ कुंभ में जल है भीतर बाहर पानी
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना, यह तत् कहत् ग्यानी।

माया के प्रति सावधानताः
लगभग सभी संत क वयों ने अपनी वाणी में माया से सावधान रहने की चेतावनी दी है। यह ईश्वर की भक्ति और उपासना में बाधा का काम करती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि माया के पाँच पुत्र हैं जो भक्त की राह में अवरोध उत्पन्न करते हैं। कबीर का वचार है क माया तो वष्णु, महेश और ब्रह्मा को भी अपनी मधुर वाणी के मोहपाश में बांध लेती है। कबीरदास के शब्दों में-

कबीर माया मोहिनी जैसे मीठी खांड।

वे माया को डायन की संज्ञा देते हुए कहते हैं-

एक डायन मेरे मन में बसे।
निस दिन मेरे जीऊ को डसे।
इस डायन के लरिका पाँच
निस दिन मोहि नचावे नाच।

नारी के प्रति दृष्टिकोणः
संत क वयों ने नारी को माया का प्रतीक स्वीकार कया है। उनके अनुसार नारी प्रभु मलन में सबसे बड़ी बाधा है। कबीर का मानना है क जिस तरह माया के आकर्षण में फंसकर मानव ईश्वर को भूल जाता है वही स्थिति स्त्री-मोह की होती है-

नारी की झाई परत अंधा होत भुजंग।
कबीरा तिनकी क्या गति जो नित नारी के संग।।

संत क वयों के अनुसार आदर्श पतिव्रता नारी ही पूजनीय है यह नारी वद्या माया का प्रतीक है। जिस तरह पतिव्रता अपने पति के बिना नहीं रह सकती वैसे ही वद्या माया अपने स्वामी ईश्वर से अलग नहीं होती।

इसी लए कबीर कहते हैं-

पतिव्रता मैली भली, काली कु चत कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर वारो, कोटि सरूप।।

संत क वयों का भाषा प्रयोगः
संत क वयों ने लोकभाषा में साहित्य की रचना की है, क्यों क उनका लक्ष्य समाज सुधार एवं वश्व धर्म का संदेश देना था। संतों की भाषा को सधुक्कड़ी नाम दिया गया है, क्यों क वह घुमक्कड़ साधु थे और देश के व भन्न भागों में भ्रमण करते थे अतः उनकी भाषा में राजस्थानी, पंजाबी, खड़ी बोली, पूर्वी हिंदी, ब्रज, अरबी, फारसी आदि भाषाओं का सुंदर मश्रण हुआ है। कई आलोचकों ने तो उनकी भाषा को खचड़ी घुमक्कड़ी या पंचमेल का नाम दिया है। उनकी काव्य भाषा मूलतः जन भाषा है तथा शास्त्रीय बंधनों से मुक्त है। यह भाषा जीवन के अनुभवों से पुष्ट है। हजारी प्रसाद द् ववेदी ने तो कबीर को भाषा का डक्टेटर कहा है, क्यों क भाषा पर कबीर का असाधारण अ धकार था। यद्य प सुंदरदास की भाषा अन्य संत क वयों से अपेक्षाकृत प्रौढ़ तथा परिमार्जित है। संत क वयों की सरल एवं सहज अ भव्यक्ति के उदाहरण दे खए-

कबीरा खड़ा बाजार में, लए मुराड़ा हाथ।
जो घर जाले अपना सो चले हमारे साथ।।

आंख ड़याँ में झांई पड़ी पंथ निहारी-निहारी।
जीभ ड़या छाला पड़या, नाम पुकारि-पुकारि।

संत क वयों ने अ धकतर लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग अपने साहित्य में कया है। अलंकारों की दृष्टि से रूपक, उपमा, अनुप्रास, यमक, श्लेष का समावेश हुआ है तो छंदों की दृष्टि से दोहा, सोरठा, सवैया का अ धकतर प्रयोग इन क वयों द्वारा कया गया है। इनकी रचनाओं में संगीतात्मकता की गुण वद्यामान है।

इस प्रकार कहा जा सकता है क भक्ति काल में संत काव्य धारा का वशेष स्थान है।इन क वयों ने निर्गुण-निराकार ईश्वर का गुणगान करते हुए प्रकृति के कण-कण में ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार कया है। यही नहीं इन क वयों ने ईश्वर प्राप्ति के संदर्भ में प्रच लत पाखंडों एवं आडंबरों का भी भरपूर वरोध कया।इन संत क वयों का काव्य उच्च कोटि का धा र्मक, नैतिक साहित्य भी है और समाज सुधार का वाहक भी। भारतीय समाज में समरसता लाने में इन संत क वयों का बहुत बड़ा योगदान है। मानव मात्र की समानता स्वतंत्रता तथा वश्व धर्म की स्थापना का प्रयास इन्हीं संतो द्वारा कया गया। अतः सामाजिक व साहित्य दृष्टि से यह साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सूफी काव्य

सूफी काव्यधारा निर्गुण भक्ति की दूसरी शाखा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे प्रेमाश्रयी शाखा के रूप में संज्ञा पत कया है। संत क वयों ने जहाँ एक ओर सर्वसाधारण के लए भक्ति के साधारण मार्ग की प्रतिष्ठा की, वहीं दूसरी ओर सूफी फकीरों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रयास कया। इस कार्य में संत क वयों की अपेक्षा उन्हें आशातीत सफलता मली। सूफी फकीर दोनों संस्कृतियों के सुंदर सामंजस्य के पक्षधर थे। इनके साहित्य की आत्मा वशुद्ध भारतीय है, यद्य प इसमें प्रेम और धर्म की वदेशी साधना भी घुल मल गई है। सूफी काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में मा लक मुहम्मद जायसी का सर्वश्रेष्ठ है।

सूफी काव्य की निम्न ल खत वशेषताएं हैं:

प्रेमाख्यान प्रबंध काव्य:
सूफी काव्य मूलतः प्रेमाख्यान काव्य है। इसमें प्रेम की प्रधानता है। प्रेम कथाओं पर आधारित यह काव्य प्रबंधात्मक शैली में लखे गए हैं, जिन्हें महाकाव्य की संज्ञा दी जाती है। सूफी काव्य में नायक-नायिका के मलन व दोनों के प्रेम मार्ग में उत्पन्न होने वाली बाधाओं का वर्णन कया गया है। प्रेम के वयोग पक्ष को इन्होंने अत्य धक महत्व दिया है। वरहावस्था का वर्णन करते हुए उन्होंने बारहमासे के वर्णन को भी महत्व दिया है और इस संबंध में भारतीय पद्धति का ही व्यवहार कया गया है कंतु कहीं-कहीं फारसी साहित्य की प्रच लत रूढ़ियों का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है।

भारतीय लोकजीवन व संस्कृति का चत्रणः
सभी सूफी रचनाओं में भारतीय लोकजीवन व संस्कृति का अद्भुत चत्रण मलता है। इन रचनाओं में हिंदू परिवारों को आधार बनाकर यहां के समाज और संस्कृति का चत्रण कया गया है। देवी देवताओं की पूजा, योगी व सन्या सयों के जीवन, ववाह संस्कार, तीज-त्योहार, जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, रहन-सहन, आचार- वचार, बारहमासा पद्धति, सती प्रथा आदि की झलक इन सूफी रचनाओं में देखी जा सकती है। इस काव्य की नायिकाएं रूपवती होकर भी पतिव्रता बनी रहती है। इसके साथ-साथ भारतीय ज्योतिष, रसायन शास्त्र तथा आयुर्वेद के ज्ञान का परिचय भी इन रचनाओं में मलता है।

कथानक रूढ़ियों की पालनाः
इस काव्यधारा से जुड़े प्रायः सभी क वयों ने कुछ रूढ़ियों का पालन कया है जिनके अनुसार उनके काव्य की कथा आगे बढ़ती है। प्रायः नायिका कसी द्वीप में रहती है। नायक स्वप्न में उसे देखकर या कसी से उसका गुणगान सुनकर या उसका चत्र देखकर उससे प्यार करने लगता है। शुक, मैना, हंस द्वारा या फर दूती द्वारा संदेश भेजा जाता है। नायक योगी वेश में नायिका की खोज के लए निकलता है। कसी फुलवारी, मंदिर अथवा चत्रशाला में नायक नायिका का मलन होता है। कोई शैतान अथवा प्रतिनायक नायक के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न करता है। नायक का उससे युद्ध होता है। अंततः नायक देवताओं की सहायता से वजयी होता है और नायिका को लेकर अपने राज्य के लए चल पड़ता है। रास्ते में समुद्र व वन की बाधाएं पार कर नायक अपने राज्य में पहुंच जाता है। 'पद्मावत', 'मधुमालती', 'मृगावती', ' चत्रावली' आदि सभी सूफी रचनाओं में इन रूढ़ियों का पालन कया गया है।

मसनवी शैली:
सूफी काव्य रचनाएं मसनवी शैली में लखी गई है। इस शैली में सर्वप्रथम अल्लाह का स्तुति तत्पश्चात हजरत मोहम्मद साहब एवं उनके सहयो गयों का गुणगान कया जाता है।उसके बाद तत्कालीन शासक अर्थात शाहे वक्त का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन कया जाता है। फर लेखक के अपने जीवन का सं क्षप्त वर्णन मलता है। कथा के प्रारंभ में नायक या नायिका के देश, कुल, आचार आदि का भी उल्लेख कर दिया जाता है।

शैतान व पीर की अवधारणा:
सूफी रचनाओं में शैतान व पीर अथवा गुरु की भू मकाओं का चत्रण हुआ है। शैतान माया के समान साधक को प्रेम के साधना मार्ग में भ्रष्ट करने वाला माना गया है। एक साधक पीर या गुरु की कृपा से ही शैतान के बंधन से मुक्त हुआ जा सकता है। 'पद्मावत' काव्य में राघव चेतन शैतान के रूप में चत्रित है। शैतान द्वारा उत्पन्न कए गए व्यवधानों से ही साधक के प्रेम की अग्नि परीक्षा होती है और उसी से उसके प्रेम में दृढ़ता तथा उज्ज्वलता आती है।

नारी चत्रण:
सभी सूफी क वयों ने नारी रूप का व्यापक वर्णन कया है। वशेषकर नायिका के रूप वर्णन में तो सूफी क वयों ने उपमानो की झड़ी लगा दी है। सूफी क वयों ने नारी के मुख्यतः तीन रूपों का वर्णन कया है- आदर्श प्रे मका, पतिव्रता पत्नी व ब्रह्म अर्थात ईश्वर। लगभग सभी नायिकाएं आदर्श भारतीय नारी के सांचे में ढाली गई है। इन रचनाओं में नायिकाएं तन-मन से नायक को सम र्पत होती है, उससे ववाह करती है तथा उसकी मृत्यु के पश्चात सती हो जाती है। कहा जा सकता है क सूफी काव्य में नारी के उज्ज्वल चरित्र का वर्णन हुआ है। इन रचनाओं में यदि नायक को हम साधक कहें तो निश्चय ही नायिकाएं साध्य सद्ध होती हैं।

प्रकृति चत्रणः
सूफी क वयों ने प्रकृति चत्रण में वशेष रु च दिखाई है। प्रकृति संयोग और वयोग दोनों अवस्थाओं के वर्णन में सूफी क वयों का आधार रही है। वशेष रूप से वरह वर्णन में क वयों ने प्रकृति का अद् वतीय चत्रण कया है। बारहमासा और षट्ऋतु वर्णन में इन क वयों का कोई सानी नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रकृति का आलंबन, उद्दीपन, दूती और मानवीकरण के रूप में अ धक चत्रण कया गया है।

रस योजनाः
सूफी काव्य में श्रृंगार व वीर रस का वर्णन हुआ है। सूफी काव्य प्रेमाख्यान काव्य है अतः उसने श्रृंगार रस की अजस्र धारा बहती है। लगभग सभी सूफी क वयों ने अपनी-अपनी रचनाओं में नायक-नायिका के मलन के माध्यम से संयोग श्रृंगार तथा बिछुड़ने पर वयोग श्रृंगार का सुंदर वर्णन कया है। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं वीर रस का भी वर्णन हुआ है जब नायक नायिका की रक्षा

के लए या उसके पता की सहायता के लए दूसरे राजा से युद्ध करता है। इसके अतिरिक्त करुण रस, अद्भुत रस, वीभत्स रस आदि का भी वर्णन इस काव्य में हुआ है।

भाषा, छंद व अलंकारः
सूफी काव्य की भाषा अवधी भाषा है। इसके अतिरिक्त देशज व अन्य क्षेत्रीय बो लयों के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। सूफी रचनाएं दोहा-चौपाई छंदों में लखी गई है। कहीं-कहीं सवैया, क वत्त आदि छंदों का प्रयोग भी हुआ है। सूफी काव्य की भाषा एक ओर जहां लोकोक्तियां और मुहावरे से सुसज्जित है, वहीं अलंकारों से भी अलंकृत है। उपमा, यमक, श्लेष, अन्योक्ति, समासोक्ति, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास तथा अतिश्योक्ति अलंकारों का अ धक प्रयोग हुआ है। इन क वयों की भाषा मंडनात्माक शैली में लखी गई है। इन्होंने संतों की तरह खंडनात्मक मार्ग नहीं अपनाया बल्कि कोमल ढंग से हिंदू-मुस्लिम एकता की नींव रखी। दोनों की जीवन पद्धति को साथ साथ चत्रित कर उनकी समानता पर बल दिया।
निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है क सूफी काव्य धारा हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण काव्यधारा है जो प्रेम मार्ग पर चलते हुए अ धक व्यावहारिक एवं प्रभावशाली सद्ध हुई। इन्होंने लौ कक प्रेम कहानियों के माध्यम से अलौ कक प्रेम कथाएं कही है। मुस्लिम होते हुए भी इन क वयों ने भारतीय लोकजीवन एवं संस्कृति को अद्भुत रूप में चत्रित कया है। उनकी रचनाओं में इस्लाम के प्रचार की अपेक्षा मनोरंजन तथा ज्ञान प्रदर्शन अ धक दिखाई पड़ता है तथा इन्होंने प्रेम को आध्यात्मिक अर्थ देने का प्रयास भी कया है। इनकी रचनाओं में सांप्रदायिक कट्टरता नहीं दिखाई पड़ती। सूफी क व सामाजिक समता में वश्वास रखते थे तथा पूर्ण मानव एवं ईश्वर में भेद नहीं मानते थे। वे मानवता में पूर्ण वश्वास रखते थे, इसी लए सूफी काव्य लोक प्रय काव्य सद्ध हुआ।

<u>कबीरदास</u>

कबीर या भगत कबीर 15वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी क व और संत थे। वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे। इनकी रचनाओं ने हिन्दी प्रदेश के भक्ति आंदोलन को गहरे स्तर तक प्रभा वत कया। उनका लेखन सखों के आदि ग्रंथ में भी देखने को मलता है।
वे हिन्दू धर्म व इस्लाम को न मानते हुए धर्म निरपेक्ष थे। उन्होंने सामाज में फैली कुरीतियों, कर्मकांड, अंध वश्वास की निंदा की और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना की थी। उनके जीवनकाल के दौरान हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उन्हें अपने वचार के लए धमकी दी थी।
कबीर पंथ नामक धा र्मक सम्प्रदाय इनकी शक्षाओं के अनुयायी हैं। धर्मदास ने उनकी वा णयों का संग्रह " बीजक " नाम के ग्रंथ मे कया जिसके तीन मुख्य भाग हैं : साखी , सबद (पद), रमैनी।
कबीर की भाषा सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खचड़ी हैं। इनकी भाषा में हिंदी भाषा की सभी बो लयों के शब्द सम्मि लत हैं। राजस्थानी, हरयाणवी, पंजाबी, खड़ी बोली, अवधी, ब्रजभाषा के शब्दों की बहुलता है।

जायसी

जायसी का पूरा नाम मा लक मुहम्मद जायसी था। यह जायस के रहने वाले थे इसी लए इनका नाम जायसी पड़ा। इनका जन्म स्थान अनुमानतः बिहार प्रांत के अंतर्गत सहसराम है। बाद में रायबरेली जिला अंतर्गत जायस में रहने के कारण इनका नाम जायसी पड़ा।
जायसी अपने समय के सद्ध फकीर थे। अमेठी राजघराने में इन्हें बहुत सम्मान प्राप्त था। कदा चत ये शीतला मां के प्रकोप से अपनी आंखें खो चुके थे और कान से भी बहरे हो गए थे।
इस प्रकार यह देखने में कुरूप थे। कहा जाता है क एक बार शेरशाह इनके रूप को देखकर हंसे थे तब उनसे उन्होंने पूछा था क 'आप मुझ पर हंस रहे हैं या मुझे बनाने वाले पर'।
देखने में ये जितने कुरूप थे, इनका हृदय उतना ही सुंदर और प वत्र था। ये हिंदू- मुस्लिम की सांप्रदायिकता से ऊपर उठकर सदैव अपने उदार वचारों को अ भव्यक्त करते रहे। मुसलमान सूफी फकीर होते हुए भी उन्होंने हिंदुओं के घरों की परंपराओं एवं रीति-रिवाजों का अपने ग्रंथ में बहुत ही क्रमबद्ध ववेचन कया है। इनकी लखी हुई पुस्तकें पद्मावत, अखरावट और आ खरी कलाम।
इनके ग्रंथों की भाषा अवधी है। चौपाई एवं दोहे उनके काव्य के प्रमुख छंद है। भाव, भाषा एवं वस्तु वर्णन की दृष्टि से इनकी काव्य उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं।

Teacher's Name- Riya Saha